

SANSKRIT DEPARTMENT

Subject- SHRIMAD BHAGAVAD GITA

SEM-I AND II

**P.K.CHAUDHARI MAHILA ARTS
COLLEGE, GANDHINAGAR**

BHAGAVAD GITA

अभ्यासक्रम

- सेम-01 अध्याय- 01 से 06
- सेम- 02 अध्याय 9,10 12 और 15

Introduction of GITA

- Wisdom of Life
- चिंता और शोक
- जीवनकी अवस्थाएं
- सांख्यज्ञान
- कर्मयोग और कर्म
- जय और पराजयमे समान

BHAGAVAD GITA

Introduction of GITA

Krishna Gita

A Dialogue between Lord Krishna and Disciple Friend Arjuna.



- **Wisdom of Bhagvad Gita.**
- Perennial Hindu Philosophy for Guidance and Better Living.
- Selected Verse Messages from Chapter 2 & 3 in Hindi

BHAGAVAD GITA

Adhyay-02

2.11



हम बातें तो बड़े विद्वानों की तरह करते हैं पर जीवन में चिंता और शोक उन बातों के लिये करते हैं जो चिंता और शोक करने के योग्य नहीं हैं ! जो विद्वान होते हैं वो न तो जीवत के लिये और न ही मृतक के लिये शोक करते हैं !

BHAGAVAD GITA

Adhyay-02

2.13



जिस प्रकार जीवात्मा इस (वर्तमान) शरीर में बाल्यावस्था से तरुणावस्था में और फिर वृद्धावस्था में निरंतर अग्रसर होता रहता है उसी प्रकार मृत्यु होने पर यह शरीरधारी आत्मा दूसरे शरीर में चला जाता है धीर व्यक्ति ऐसे परिवर्तन से मोह को प्राप्त नहीं होते !

Adhyay-02

Gita 2/14



सुख तथा दुःख का क्षणिक उदय तथा कालक्रम में उन का अंतरध्यान होना सर्दी तथा गर्मी की ऋतुओं के आने जाने के समान है! वे इन्द्रिय बोध से उत्पन्न होते हैं और मनुष्य को चाहिए कि अविचल भाव से उन को सेहन करना सीखे !

BHAGAVAD GITA



जय अथवा पराजय की भावना त्याग कर समभाव से अपना कर्म करो – ऐसी समता योग कहलाती है !

BHAGAVAD GITA

Adhyay-02

Gita 2/ 15



जो पुरुष सुख तथा दुःख में विचलित नहीं होता और इन दोनों में समभाव रखता है वह निश्चित रूप से मुक्ति के योग्य है!

BHAGAVAD GITA

Gita 2/27



जन्म है तो मृत्यु भी अवश्य है मृत्यु के बाद पुनर्जन्म भी निश्चित है ! जन्म और मृत्यु के बीच जितना भी समय है उस में कुछ ऐसे कर्म हैं जिन से बचा ही नहीं जा सकता इस लिये उन कर्मों को शोक या अनमने मन से नहीं परन्तु प्रसन्नता तथा उत्साह से करना चाहिए!

BHAGAVAD GITA

Adhyay-03



व्यक्ति को अपना कर्म (कर्तव्य) करने का अधिकार है किन्तु कर्म के फल पर उस का कोई अधिकार नहीं ! तुम न तो अपने आप को अपने कर्मों के फलों का कारण मानो, न ही कर्म न करने में कभी असक्त होओ !

BHAGAVAD GITA



जय अथवा पराजय की भावना त्याग कर समभाव से
अपना कर्म करो - ऐसी समता योग कहलाती है !

BHAGAVAD GITA

Adhyay-02

Gita 2/49



व्यक्ति को सभी निन्दनीय कर्मों से दूर रहना चाहिए ! परन्तु जो व्यक्ति अपने सकाम कर्मों का फल भोगना चाहता है वह भी कृपण कहलाता है !

BHAGAVAD GITA

Gita 2/55



जिस समय यह पुरुष मन में उत्पन्न होने वाली इन्द्रिय तृप्ति की समस्त कामनाओं का परित्याग कर देता है तो मन शुद्धि की और अग्रसर होता है ऐसा विशुद्ध हुआ मन आत्मा में ही संतोष प्राप्त करता है ! जो आत्मा में सन्तोष प्राप्त करते हैं वह ही दिव्य चेतना को प्राप्त होते हैं ! ऐसी स्थिती को स्थितप्रज्ञ कहा जाता है !

(स्थितप्रज्ञ = स्थिर प्रज्ञा = स्थिर बुद्धि)

BHAGAVAD GITA

Adhyay-02

Gita 2/57



जो शुभ की प्राप्ति से
हर्षित नहीं होता और
अशुभ होने पर उस के
मन में दुःख नहीं होता
वह पूर्ण ज्ञानी है !

BHAGAVAD GITA

Adhyay-02



देहधारी जीवों की
इन्द्रियभोग से निवृत्ति
होने पर भी इन्द्रिय
भोगों की इच्छा बनी
रहती है ! लेकिन किसी
इस से भी उत्तम रस की
प्राप्ति या अनुभव होने
पर इन इन्द्रिय भोगों की
इच्छा से निवृत्ति पाई जा
सकती है